महर्षि वाल्मीकि रामायण
का परवर्ती साहित्य पर प्रभाव

(राष्ट्रिय संगोष्ठी में प्रस्तुत किए गए शोध पत्र)

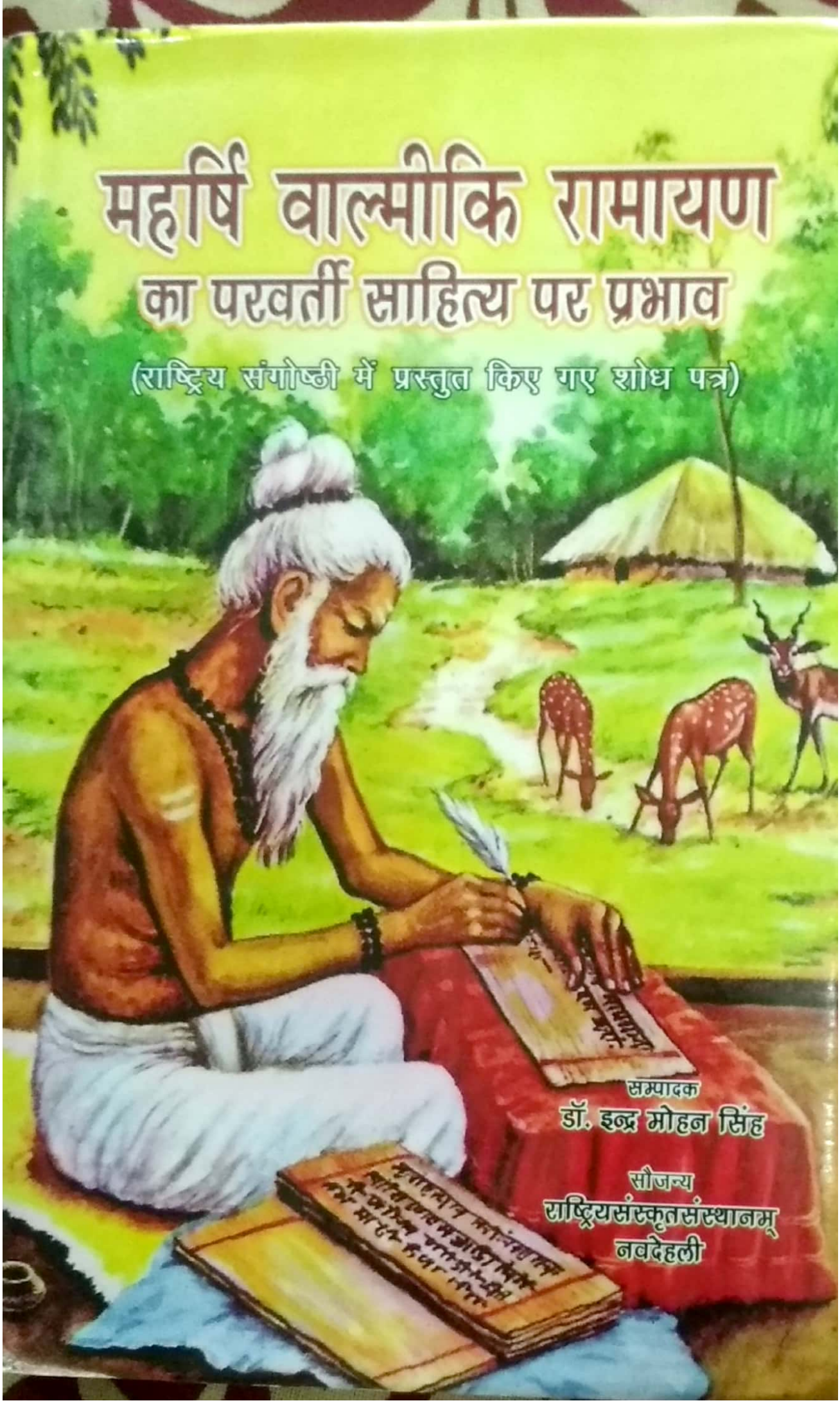

सम्पादक
डॉ. इन्द्र मोहन सिंह

सौजन्य
राष्ट्रियसंस्कृतसंस्थानम्
नवदेहली

Scanned with CamScanner

विषय–सूची

i	आशीर्वचन– डा. वी. एस घुम्मण	6
ii	शुभाशंसा– डा. राधावल्लभ त्रिपाठी	7
iii	Benediction S- Subramanya Sarma	10
iv	प्ररोचना	11
v	सेमिनार प्रतिवेदन–डा. विष्णु दत्त शर्मा	12
vi	भूमिका–डा. इन्द्रमोहन सिंह	13

शोध पत्र विषय–सूची

1.	प्रतिमाऽभिषेकनाटकयोः श्रीरामचरितवर्णने रामायणस्य प्रभाव – रमाकान्तपाण्डेयः	15
2.	रामायण के आलोक में जानकी परिणय के सन्दर्भ–डा. वीरेन्द्र अलंकार	25
3.	श्रीमद् वाल्मीकीय रामायण के "सुन्दरकाण्डम्" और रामचरितमानस के "सुन्दरकाण्ड" में कथासाम्य– डा.निर्मल कौशिक	31
4.	श्री दसम ग्रन्थ साहिब में रचित रामावतार और वाल्मीकि रामायण की तुलनात्मक समीक्षा– डा. शरण कौर	43
5.	श्रीराम के सम्बन्ध में दृष्टि भेद (श्री मद्वाल्मीकीय रामायण एवं अध्यात्मरामायण के परिप्रेक्ष्य में)– डा. त्रिलोचन शर्मा	51
6.	रामायण का रघुवंश पर प्रभाव– डा. वीरेन्द्र कुमार	56
7.	अभिषेक नाटक पर रामायण का प्रभाव– डा. आशीष कुमार	62
8.	संस्कृत साहित्य में प्रतिष्ठित महर्षि वाल्मीकि– डा. नौनिहाल गौतम	70
9.	खड़ी बोली में विरचित खण्डकाव्यों में रामायण के कथा प्रसंगों का प्रस्तार विश्लेषण– डा. रविदत्त कौशिश	80
10.	वाल्मीकि रामायण और रघुवंश महाकाव्य– डा. अनीता	89
11.	ਪੰਜਾਬੀ ਅਖਾਣ ਅਤੇ ਰਾਮ-ਕਥਾ ਸਬੰਧੀ ਸੰਸਕ੍ਰਿਤ-ਗ੍ਰੰਥ-ਸੂਕਤੀਆਂ ਦਾ ਆਪਸੀ ਸਬੰਧ ਪ੍ਰੋ. (ਡਾ.) ਲਖਵੀਰ ਸਿੰਘ)	95
12.	कुन्दमाला नाटक पर वाल्मीकि रामायण का प्रभाव– डा. कामदेव झा	123
13.	वाल्मिकि रामायण और उन्नमत राघव का तुलनात्मक अध्ययन – डा. दीपशिखा	132
14.	राम परम्परा के संस्कृत नाटक– डा. सुषमा अलंकार	142
15.	रामकथा पर आधारित हिन्दी उपन्यास एक;सिंहावलोकन– रचना	148
16.	वाल्मीकिरामायणस्य बालरामायणे प्रभावः– कपिल देवः	155
17.	वाल्मीकि रामायण का हनुमद्दूतम् खण्डकाव्य पर प्रभाव– गोपी शर्मा	160
18.	वाल्मीकिरामायण से प्रभावित कतिपयकाव्य–ओमनदीप शर्मा	170
19.	वाल्मीकिरामायण का रघुवंश महाकाव्य पर आचरणीय प्रभाव – डा. संजय कुमार	191
20.	रामायण का मेघदूत पर प्रभाव – संजीव घारु	201
	सम्बन्धित विद्वानों के सम्पर्क–सूत्र	204

Scanned with CamScanner

वाल्मीकिरामायण का रघुवंश महाकाव्य पर आचरणीय प्रभाव

डॉ. संजय कुमार

वाल्मीकि रामायण संस्कृत उपजीव्य काव्यों में महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है। इसका आख्यान, भाषा, रस, अलंकार तथा इसमें प्रतिपादित संस्कार और संस्कृति से सम्पूर्ण संस्कृत जगत किसी न किसी रूप में प्रभावित दिखलाई पड़ता है। महाकवि कालिदास द्वारा प्रणीत महाकाव्य, नाटक एवं खण्ड काव्य सभी वाल्मीकि रामायण से प्रभावित हैं। लेकिन उनका रघुवंश महाकाव्य विशेषरूप से प्रभावित दृष्टिगोचर होता है। महर्षि वाल्मीकि एक साहित्य का ऐसा मानदण्ड स्थापित करने का प्रयास किये हैं जिसकी अविरल धारा से बिना स्नान किये संस्कृत का कोई भी कवि बच नहीं पाता है। रघुवंश महाकाव्य इसका प्रमाणभूत स्थल है। कालिदास अपने अनुपम कृति रघुवंश महाकाव्य में जो भी भाव–भाषा का आकलन किया है वह सब कुछ वाल्मीकिरामायण में प्राप्त होता है। कालिदास अपनी लेखनी में केवल कृत्रिमता प्रदान करके अपनी विलक्षणता को सिद्ध किया है। वह कृत्रिमता नवीनता को इस तरह में धारण की हुई है, कही भी कृत्रिमता का मान ही नहीं होता है। बल्कि क्षणे–क्षणे यन्नवता तदैव रूप रमणीयता का ही बोध कराती है। इसी रूप में वाल्मीकिरामायण का आचरण पक्ष भी है जिसका प्रभाव रघुवंश महाकाव्य में स्पष्टतः दिखाई देता है। वस्तुतः आचरण हमें परम्परा से प्राप्त होता है। जिसके विषय में मनुस्मृतिकार लिखते हैं–

तस्मिन देशे य आचारः पारम्पर्यक्रमागतः।

वर्णानां सान्तारालानां स सदाचार उच्यते।।[1]

अर्थात् उस देश में अनादि पिता–पुत्र, गुरु शिष्यादि परम्परा के क्रम से चला आया हुआ जो मूर्धावसिक्तादि अन्तरालजों का और ब्रह्माणादि श्रेष्ठ लोगों का आचरण है वही सदाचार है। यानि आचरण हमें सदैव परम्परा से प्राप्त होता है। परम्परा भूत एवं वर्तमान की कड़ी कही जाती है। कड़ी इसलिए कि वह भूत को वर्तमान से जोड़ती है। जो अपने पूर्वजों की श्रेष्ठ थासी से जुड़ा अपनी परम्परा को पाया। यह परम्परा प्रथित गुण स्वयं प्रकाशित हो जाते हैं। भामिनीविलास में कहा गया है–

Scanned with CamScanner